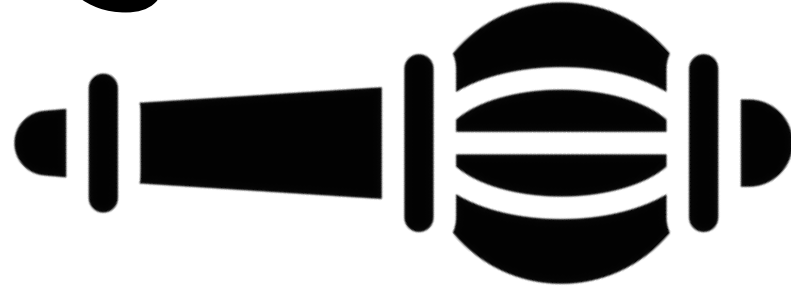


श्री हनुमान चालीसा



श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा, कानन कुंडल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे, काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥
शंकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जगवंदन ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मनबसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे, रामचंद्र के काज सवारै ॥

लाय सजीवन लखन जियाए, श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥

सहस्र बदन तुम्हरो जस गावै, अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू, लिल्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही, जलधि लाँघि गए अचरज नाही ॥
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे, होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहु को डरना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हाँक तै कापै ॥
भूत पिशाच निकट नहि आवै, महावीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरे सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तै हनुमान छुडावै, मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै, जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंतकाल रघुवरपुर जाई, जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

और देवता चित्त ना धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गुसाईँ, कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥



पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

HanumanChalisas.Com

